कहानी

चीकू और जादुई कुआं

अरे मेरे लाल, ज़रा पास आकर बैठ जा... हाँ, रज़ाई ठीक कर ले, ठंड बढ़ रही है. आज दादी तुम्हें एक ऐसी कहानी सुनाएगी जो सिर्फ़ कहानी नहीं है, बल्कि ज़िंदगी का रास्ता दिखाने वाली बात है. ये उस ज़माने की बात है जब गाँवों में बिजली कम और रिश्तों की रौशनी ज़्यादा होती थी, जब बच्चे मिट्टी में खेलकर बड़े होते थे और शाम होते ही दादी की खाट के पास आकर कहानी सुनते थे. उसी समय, उसी गाँव में रहता था एक नन्हा सा बच्चा — चीकू. चीकू देखने में जितना प्यारा था, उतना ही शरारती भी. उसकी हँसी पूरे घर को भर देती थी, लेकिन उसके मन में एक छोटी सी कमी थी — उसे मेहनत से डर लगता था. पढ़ाई, काम या कोई ज़िम्मेदारी आते ही वह मुँह बना लेता और कहता, 'दादी, कल कर लेंगे.' चीकू अपने माँ-बाप के साथ नहीं, बल्कि अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहता था. दादी के बाल सफ़ेद थे, आँखों में अनुभव और दिल में अनंत प्यार. वे रोज़ सुबह उठकर पूजा करतीं, चूल्हे पर खाना बनातीं और चीकू को स्कूल भेजतीं. जाते वक्त हमेशा यही कहतीं, 'बेटा, मन लगाकर पढ़ना, मेहनत कभी बेकार नहीं जाती.' चीकू सिर हिलाता ज़रूर था, पर दिल से उनकी बात नहीं मानता. स्कूल में भी वह बस खेल के बारे में सोचता रहता. जब टीचर सवाल पूछतीं, तो वह चुपचाप ज़मीन देखने लगता.

एक दिन गाँव में बहुत चर्चा होने लगी. कुएँ पर, चौपाल पर, खेतों में — हर जगह लोग एक ही बात कर रहे थे कि जंगल के अंदर बहुत पुराना जादुई कुआँ है. कहा जाता था कि वह कुआँ ईमानदार लोगों की मन की इच्छा पूरी करता है. बच्चे ये सुनकर रोमांचित थे, और बड़े लोग इसे बस कहानी समझकर हँस रहे थे.

लेकिन चीकू के मन में यह बात घर कर गई. उसने सोचा, 'अगर ये कुआँ सच में जादुई है, तो मुझे मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी.' उसी रात वह देर तक सो नहीं पाया. अगली सुबह उसने अपनी गुल्लक से एक सिक्का निकाला. दादी रोटी बना रही थीं. चीकू ने दादी को बिना बताए चुपचाप घर से निकल लिया. जंगल का रास्ता आसान नहीं था. कहीं काँटे चुभे, कहीं पैर फिसला, कहीं डरावनी आवाज़ें आईं. कई बार मन किया कि वापस लौट जाए, लेकिन फिर उसने सोचा, 'बस थोड़ी देर और, फिर जादू मिल जाएगा.' जब वह कुएँ तक पहुँचा, तो उसे देखकर ही डर लगा. कुआँ बहुत पुराना था, पानी काला और गहरा. चीकू ने काँपते हाथों से सिक्का डाला और कहा, 'मुझे बिना मेहनत के सब कुछ आ जाए.'

अचानक हवा तेज़ चलने लगी, आँखों के आगे अंधेरा छा गया. जब चीकू ने आँखें खोलीं, तो वह अपने बिस्तर पर था. उसने सोचा — 'जादू हो गया!' वह खुशी-खुशी दादी के पास गया, लेकिन जब दादी ने उससे किताब पढ़ने को कहा, तो उसे कुछ समझ नहीं आया. स्कूल में भी वही हाल हुआ. अब चीकू डरने लगा. उसे लगा शायद उसने कुछ गलत माँग लिया. कई दिन तक वह उदास रहा. न खेल में मन लगा, न खाने में. एक शाम दादी ने उसे अपने पास बैठाया, उसके सिर पर हाथ फेरा और बोलीं, 'बेटा, कुछ तो बात है.' चीकू रो पड़ा और सारी सच्चाई बता दी. दादी ने गुस्सा नहीं किया. उन्होंने बस इतना कहा, 'बेटा, ज़िंदगी में शॉर्टकट ढूँढने वाले अक्सर रास्ता ही खो बैठते हैं. असली जादू मेहनत, धैर्य और सच्चाई में होता है.'

उन बातों ने चीकू का दिल छू लिया. उस दिन के बाद उसने बदलने की ठानी. शुरुआत मुश्किल थी. कई बार मन भागता, लेकिन दादी की बातें उसे रोक लेतीं. धीरे-धीरे पढ़ाई आसान लगने लगी. टीचर की तारीफ़ मिली. दोस्तों ने भी देखा कि चीकू बदल रहा है. एक दिन चीकू दादी के पास आया और बोला, 'दादी, अब मुझे जादू समझ आ गया.' दादी मुस्कुराईं. चीकू बोला, 'मेहनत ही सबसे बड़ा जादू है.' दादी की आँखें भर आईं. उन्होंने उसे गले लगा लिया. तो मेरे बच्चे, यही कहानी है. याद रखना...

सीख:

मेहनत से भागने वाला कभी आगे नहीं बढ़ता, और जो धैर्य से चलता है वही सच्ची सफलता पाता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

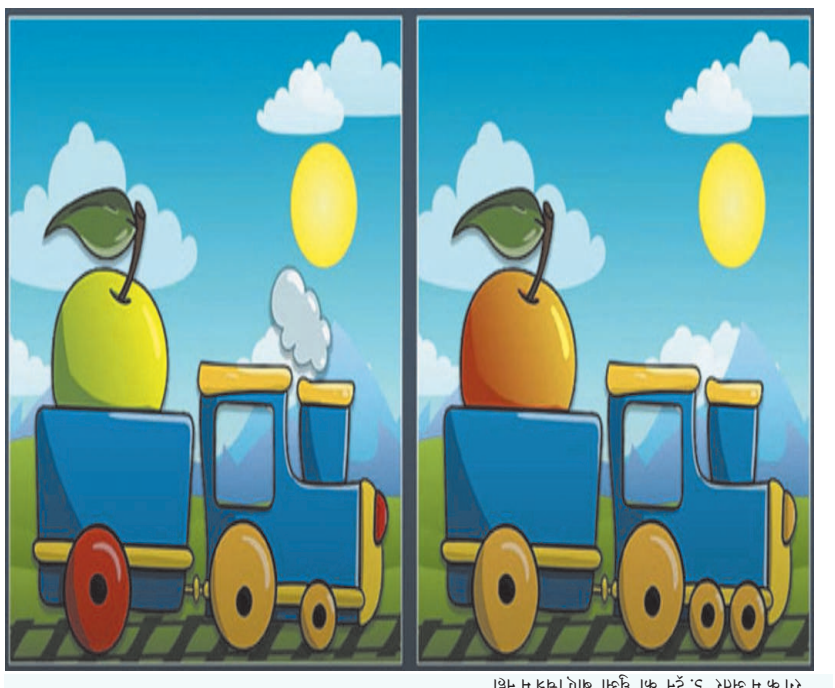

उत्तर- 1. सेब का रंग बदला हुआ है 2. ट्रेन के पिछले पहिए के रंग में अंतर 3. आगे के पहिए की संख्या में अंतर 4. ट्रेन के आगे लगी लाइट के रंग में अंतर 5. ट्रेन का धुआं वाला चित्र में नहीं

प्रेरक प्रसंग

अहिल्याबाई होल्कर : मंदिरों की संरक्षिका

अहिल्या—यह नाम केवल एक रानी का नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और आस्था की रक्षा करने वाली एक महान आत्मा का प्रतीक है. जब-जब भारत के मंदिरों, तीर्थों और पवित्र स्थलों की बात होती है, तब अहिल्याबाई होल्कर का नाम श्रद्धा के साथ लिया जाता है. 18वीं शताब्दी में, जब देश राजनीतिक अस्थिरता और आक्रमणों से जूझ रहा था, उस समय अहिल्याबाई ने न केवल मालवा राज्य का कुशल शासन किया, बल्कि पूरे भारत में टूटे-फूटे मंदिरों और धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण कराकर सनातन संस्कृति को नई शक्ति दी. उनका जीवन यह दिखाता है कि सच्चा शासन केवल सत्ता नहीं, बल्कि धर्म, सेवा और संरक्षण का दायित्व होता है.

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 1725 में महाराष्ट्र के चौंडी गाँव में हुआ. संस्कार और सरलता उन्हें बचपन से ही विरासत में मिली. विवाह के बाद वे होल्कर परिवार का हिस्सा बनीं और कठिन परिस्थितियों में भी अद्भुत धैर्य का परिचय दिया.

पति और ससुर के निधन के बाद उन्होंने राज्य की बागडोर संभाली. एक विधवा महिला द्वारा शासन करना उस समय असाधारण बात थी, लेकिन अहिल्याबाई ने अपने विवेक और धर्मनिष्ठा से यह सिद्ध कर दिया कि नेतृत्व साहस और समझ से चलता है. काशी में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण अहिल्याबाई होल्कर का सबसे प्रसिद्ध कार्य माना जाता है.

मुगल काल में नष्ट किए गए इस पवित्र मंदिर को उन्होंने दोबारा बनवाया, जिससे करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था को नया आधार मिला. इसी प्रकार उन्होंने सोमनाथ मंदिर, उज्जैन के महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, गया, द्वारका, रामेश्वरम, बद्रीनाथ और केदारनाथ जैसे प्रमुख तीर्थ स्थलों पर मंदिरों और घाटों का निर्माण करवाया. इन स्थानों पर आज भी उनके कार्यों के प्रमाण मिलते हैं. अहिल्याबाई केवल मंदिर बनवाने तक सीमित नहीं रहीं. उन्होंने यात्रियों और साधुओं के लिए धर्मशालाएँ, कुएँ, बावड़ियाँ और घाट बनवाए ताकि दूर-दराज़ से आने वाले श्रद्धालुओं को कोई कष्ट न हो. उनका मानना था कि धर्म वही है जो जनकल्याण से जुड़ा हो. उन्होंने मंदिरों की देखरेख के लिए स्थायी व्यवस्थाएँ कीं और पुजारियों व सेवकों को सम्मानजनक जीवन प्रदान किया.

उनका यह कार्य इसलिए भी विशेष था क्योंकि उन्होंने पूरे भारत को एक सांस्कृतिक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया. मालवा की रानी होकर भी उन्होंने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम—हर दिशा में समान भाव से धार्मिक स्थलों का संरक्षण किया. उनका जीवन यह सिखाता है कि सच्ची भक्ति केवल पूजा नहीं, बल्कि विरासत की रक्षा भी है.

अहिल्याबाई होल्कर आज भी प्रेरणा देती हैं कि यदि नीयत पवित्र हो और उद्देश्य समाज का हित हो, तो एक व्यक्ति भी पूरे देश की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रख सकता है. वे केवल एक शासिका नहीं, बल्कि भारत की धार्मिक चेतना की संरक्षिका थीं.

शीश महल - आमेर किले का रत्न

शीश महल राजस्थान के जयपुर शहर के पास स्थित आमेर किले का सबसे आकर्षक और प्रसिद्ध भाग है. यह महल अपनी अद्भुत काँच की सजावट, बारीक कारीगरी और राजसी भव्यता के लिए जाना जाता है. शीश महल राजपूत और मुगल स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण है, जो देखने वालों को आज भी चकित कर देता है. शीश महल का निर्माण 16वीं से 17वीं शताब्दी के बीच आमेर के कछवाहा राजाओं द्वारा करवाया गया था. इतिहासकारों के अनुसार इसका निर्माण कार्य राजा मान सिंह के समय शुरू हुआ और बाद में सवाई जय सिंह के शासनकाल में इसे और भव्य रूप दिया गया.

यह महल मुख्य रूप से राजपरिवार के विश्राम और विशेष अवसरों के लिए उपयोग में लाया जाता था. शीश महल की सबसे बड़ी विशेषता इसकी दीवारों और छतों पर जड़े हुए हज़ारों छोटे-छोटे शीशे हैं. इन शीशों को इस प्रकार लगाया गया है कि अँधेरे कमरे में यदि एक दीपक भी जला दिया जाए, तो उसकी रोशनी शीशों से टकराकर पूरे महल को चमका देती है, जैसे आकाश में अनगिनत तारे जगमगा रहे हों. इसी कारण इसे शीश महल कहा जाता है. महल की आंतरिक सजावट में सफ़ेद संगमरमर, रंगीन पत्थर, फूलों की आकृतियाँ और ज्यामितीय डिज़ाइन बनाए गए हैं. शीशों की जड़ाई अत्यंत बारीकी और धैर्य से की गई है, जो उस समय के कारीगरों की उच्च कला-कुशलता को दर्शाती है. यह केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि उस युग की तकनीकी और वास्तुकला की उन्नति का भी प्रमाण है.

ऐसा माना जाता है कि शीश महल का उपयोग गर्मियों में रानियों और शाही परिवार के लिए किया जाता था, क्योंकि शीशों के कारण रोशनी फैलती थी और वातावरण ठंडा बना रहता था. आज शीश महल भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जाता है. देश-विदेश से आने वाले पर्यटक इसकी भव्यता और अनोखी बनावट को देखकर अत्यंत प्रभावित होते हैं. शीश महल हमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला और इतिहास की याद दिलाता है.

जानकारी

भूल भुलैया

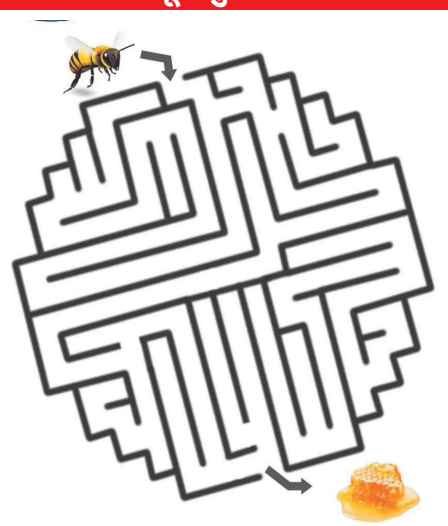

कविता

हरे-भरे रंग

हरे-भरे पेड़, नीला आसमान,
चिड़ियों की चहचहाहट, प्यारा ये जहान.

सूरज की किरणें, फूलों की खुशबू,
बूंद-बूंद में छुपी है जीवन की झू.

बाग में खेलें हम, घास पर लेटें,
तितलियों के साथ रंगीनी से खेलें.

धरती हमारी, सुनहरी और प्यारी,
इसे बचाना है, यही हमारी जिम्मेदारी.

बूझो तो जानें

- मैं पानी में रहती हूँ, लेकिन भीगती नहीं. मैं क्या हूँ?
  (मछली)
- मैं हमेशा ऊपर उड़ती हूँ, पर पंख नहीं हैं. मैं क्या हूँ?
  (ध्वनि / आवाज़)
- काले-भाले और मीठे होते हैं, बच्चों के हाथों में सबसे ज्यादा प्यारे होते हैं.
  (चॉकलेट)
- मैं सफ़ेद हूँ, गिरती हूँ, लेकिन पिघल जाती हूँ. मैं क्या हूँ?
  (बर्फ)
- कौन सी चीज़ जितनी ज्यादा निकालोगे, उतनी बड़ी होती जाएगी?
  (गड्ढा)
- मैं जलती नहीं, पर रोशनी देता हूँ. मैं क्या हूँ?
  (चाँद)
- मैं बिना पाँव के चलती हूँ, बिना मुंह के बोलती हूँ. मैं क्या हूँ?
  (घड़ी)

हंसी-ठिठोली

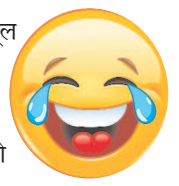

- पप्पू: मम्मी, मैं स्कूल क्यों जाता हूँ?
  मम्मी: ताकि तुम पढ़ो.
  पप्पू: अरे मम्मी, मैं तो सोने के लिए जाता हूँ!
- बबलू: अगर गाड़ी में पाँच लोग हैं और दो उतर जाएँ, कितने रहेंगे?
  गोलू: सर, पाँच! क्योंकि उतरने के बाद भी दो सड़क पर हैं ना!
- डॉक्टर: तुम हमेशा देर से क्यों आते हो?
  पेशन्ट: सर... मैं टाइम मशीन में उल्टा चला जाता हूँ, लेकिन वापस नहीं आ पाता!
- छोटू: मम्मी, मेरा फोन चोरी हो गया!
  मम्मी: अच्छा! तुम्हारी पढ़ाई भी अब घर आकर लगेगी!
- टीचर: सूरज और चाँद में क्या अंतर है?
  बच्चा: सर, सूरज हमारी घड़ी चलाता है, चाँद हमारी नींद!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

बिंदु मिलाओ

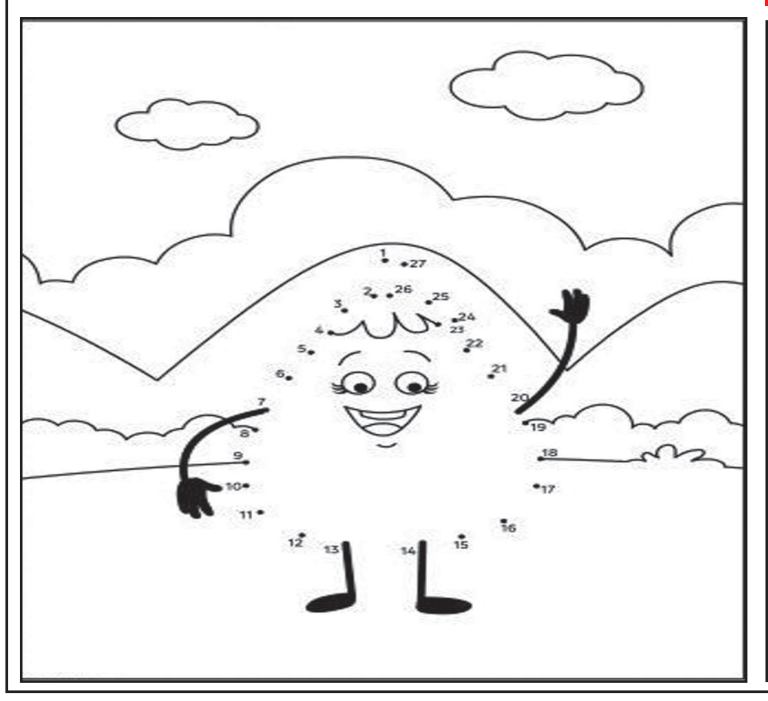

रंग भरो